# केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
क्षेत्रीय कार्यालय - बेंगलुरु
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
## Central Board Of Secondary Education
Regional Office – Bengaluru
(Ministry of Education, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

के.मा.शि.बो./क्षे.का.(बेंग)/हिंदी प्रकोष्ठ/2024/15 दिनांक: 30.04.2024

सेवा में,

अवर सचिव,(राजभाषा)
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,
शिक्षा केन्द्र 2, समुदायिक भवन,
प्रीत विहार, दिल्ली - 110092

**विषयः- राजभाषा हिंदी संबंधी गतिविधियों का आयोजन संबंधी रिपोर्ट।**

महोदय/महोदया

उपर्युक्त विषय के संबंध में यह सूचित किया जाता है कि परिपत्र संख्या- फा. 12/केमाशिबो/हिंदी प्रकोष्ठ/2023/7790-7875 के अनुसार निर्देशित राजभाषा हिंदी संबंधी मासिक गतिविधियों का आयोजन इस कार्यालय द्वारा दिनांक 29.04.2024 को किया गया जो निम्न प्रकार है-

| क्र. सं. | गतिविधि | माह | प्रतिभागी |
|---|---|---|---|
| 1 | निबंध लेखन (विषयः- प्रकृति से मित्रता) | अप्रैल 2024 | 1 श्री तुषार कान्ति मंडल, अनुभाग अधिकारी<br>2 मोहम्द तौकीर आलम अंसारी, वरिष्ठ सहायक<br>3 श्रीमती उर्वशी सोनी, वरिष्ठ सहायक |

सूचनार्थ हेतु प्रषित किया जा रहा है जिसके चलचित्र राजभाषा टैब पर अपलोड करने के लिए संलग्न किए गए हैं।

भारत 2023 INDIA
EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

**भवदीय**

जे. सुनील कुमार 30/4/2024

**(जे. सुनील कुमार)**
**अवर सचिव/राजभाषा अधिकारी**

क्षेत्रीय कार्यालय, ज्ञान भारती मेन रोड़, विपक्ष लॉ स्कूल ऑफ इंडिया युनिवर्सिटी,
चंद्रा लेआउट एक्सटेंशन 2 स्टेज, नागरभावी, बेंगलूरू - 560072
Regional Office, Gnana Bharathi Main Road, Opp. Ntional law School of India University,
Chanda Layout Extension II Stage, Naagarabhaavi, Bengaluru – 560 072
Website: - www.cbse.nic.in, Email: - robengaluru@cbse.gov.in Contact No. 080-29909912/13/14

**केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय - बेंगलूरु**

नाम :- तुषार कान्ति मंडल

क्रमांक :- 1072

प्रतियोगिता का नाम :- प्रकृति से मित्रता पर विचार

प्रकृति इंसान की सबसे अच्छी मित्र है।
प्रकृति है तो जीवन है, सुख है वैभव है।
प्रकृति की सुंदरता को देखना चाहिए।
पहाड़ों से सीखना चाहिए मजबूती से खड़ा होना।
समन्दर से सीखना चाहिए खिलखिलाते हुए लहराना।
फूलों से रंग और खुशबों को बिखरना।
हवाओं से सीखना चाहिए बेबाक होकर बहना।
पक्षियों से चहचहाना, पेड़ों से धूप में तपकर राहगीरों को, मनुष्य को, जानवरों को ठंडी छाव देना।
प्रकृति केवल देना सिखाती है और मनुष्य अपनी झोली भर-भर कर लेती रहती है।
प्रकृति में कई राज और करिश्मे है, जिन्हें जानने और पाने के लिए उन्हे खोजना होगा, प्रकृति में घुल-मिलना होगा।
कभी आपको अकेलापन महसूस हो तो निकल पड़े, किसी पहाड़ पर, नदी किनारे, जंगल में, खेतों में, आप पायेंगे ये प्रकृति ही है जो सभी के खाली पन, अकेले पन को बड़ी आसानी से दूर कर देती है।

प्रकृति को बचाये रखना हमारा लक्ष्य होना चाहिए, प्रकृति का ख्याल रखना चाहिए और यह तभी संभव है जब हम प्रकृति से मित्रता करेंगे। प्रकृति के बिगड़ते स्वरूप को बचाना होगा। अधिक पौधों-पेड़ों का रोपण करना होगा। जंगलों को काटने से रोकना होगा। हर तरह से प्रदूषण को रोकना होगा, जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, इत्यादि। पशु-पक्षियों की संरचना को बनाए रखना होगा उनकी रक्षा करनी होगी। आने वाली पीढ़ी को प्रकृति से प्रेम और मित्रता के लिए सजग और जागरूक करना होगा। जिससे उन्हे भविष्य

में किसी प्रकार की कोई परेशानी न हो। ऐसा न हो प्रकृति मित्रता के लिए अपने बाहें फैलाये खड़ी रहे और हम बस देखते रह जाए।

तुषार कान्ति मंडल
अनुभाग अधिकारी

**केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय - बेंगलूरु**

प्रतियोगिता का नाम :- प्रकृति से मित्रता

क्रमांक :- 1871

प्रस्तावना → प्रकृति से हमारी मित्रता तभी से है जबसे इस पृथ्वी का विकास हुआ था। कुदरत ने हमे (मनुष्य जाति) को जीवन जीने के लिए स्वर्ग जैसी प्रकृति प्रदान की है तथा यह आरंभ काल से चली आ रही है।

इस प्रकृति में आसमान, चाँद-तारे, हरियाली पेड़-पौधे, पक्षी जानवर तथा वायुमण्डल शामिल है। आरंभ काल से ही प्रकृति मानव जाति की मित्र बनकर रही है, मनुष्य जाति के प्रारंभ से लेकर आधुनिक युग तक का मानव विकास में प्रकृति का ही योगदान रहा है।

प्रकृति ने हर संभव मनुष्य का सहयोग किया है। जैसे वायुमण्डल द्वारा स्वस्थ्य वायु प्रदान किया, सुगंधित वातावरण के लिये पौधों पर फूल दिये, भोजन के लिए फल-सब्जी प्रदान की की तथा एक संपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र बनाए रखा जिसमें जीव-जन्तुओं ने अपनी भूमिका अदा की।

परन्तु इसके बदले में हमने प्रकृति को क्या दिया, शायद कुछ भी नहीं। हम मनुष्य जाति ने सिवाये इस मित्र रूपी प्रकृति को नुकसान पहुँचाने के अलावा कुछ नहीं किया। हमने पेड़-पौधे काटे, विकास के नाम पर फैक्ट्रियां बनाकर वायुमण्डल को प्रभावित किया जिसके परिणाम स्वरूप हम आज मानव जाति को ही नुकसान पहुँचा बैठे हैं।

समय-समय पर प्रकृति ने बाढ़, सूखा, महामारी के रूप में मानव जाति को चेताया भी है परन्तु हम अपने स्वार्थ तथा आधुनिकता में इतना लीन हो चुके हैं कि प्रकृति की क्षति हमे दिखायी ही नहीं पड़ती।

हालांकि प्रकृति ने मनुष्य के विकास में सदैव साथ दिया है पर हमने विकास की आड़ में प्रकृति का ही नुकसान कर बैठे हैं। ईश्वर ने मनुष्य को तोहफे में सबसे सुन्दर प्रकृति ही दी है। हमारे स्वास्थ्य के लिये पेड़ पौधे दिये, स्वच्छ जल पीने के लिए दिया, सूर्योदय-सूर्यास्त, पक्षी जानवर खेत-खलिहान नदी तालाब जैसे मनोहारी दृश्य दिया। और हमारे इस प्रकृति के नुकसान करने पर समय-समय पर चेतावनी भी गया जैसे सचमुच ही प्रकृति हमें हमारी सच्ची मित्र बनकर हमारा ध्यान रख रही है हो।

उपसंहार → जिस प्रकार से एक सच्चा मित्र हर सुख-दुख में साथ रहता है गलती करने पर हमें सचेत करता है उसी प्रकार प्रकृति ने भी हर-कदम मानव जाति का साथ दिया है और हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम इस प्रकृति का ख्याल रखें।

वास्तव में प्रकृति हमसे कुछ भी नहीं चाहती है वह बस मनुष्य को देती ही आयी है पर मनुष्य ने सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का नुकसान ही किया है अब हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम अगर कुछ दे नहीं सकते तो प्रकृति का नुकसान भी न करें। हमें वहीं शुरुआत में जो मानव जाति को प्रकृति मिली थी उसी रूप में ढालने की कोशिश करनी चाहिए। ताकि हम फिर से आने वाले युग को वही स्वर्ग रूपी प्रकृति दे सकें जिसके वे योग्य हैं।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय - बेंगलूरु

प्रतियोगिता का नाम :- निबन्ध लेखन

क्रमांक :- 1890

## प्रकृति से मित्रता

मित्रता दो मनुष्यों के बीच वह अद्वितीय रिश्ता है जिसमें जाती, आयु, वर्ग, रंग, धर्म आदि किसी का भी कोई मापदंड तय नहीं है। यह केवल मन मिलने की बात है। इसी को अगर गौर से देखा जाये तो यह भावना केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं है। इसे दो या दो से ज्यादा जानवरों, जानवरों और मनुष्यों, यहाँ तक कि एक जीव और एक अजीव के बीच भी देखा गया है। जैसे कि एनी फ्रेंक और उसकी डायरी। इसी प्रकार, मनुष्यों को जन्मोपरांत और तो और जन्म से पहले भी प्रकृति ही संभालती है। मनुष्य जो भी है, जहाँ से भी आया है, जहाँ भी आया है, जो भी खाता है जो भी पीता है आदी आदि, सभी कुछ प्रकृति का ही दिया तो है। ऐसे में यह ज़ाहिर सी बात है कि मनुष्यों और प्रकृति के बीच एक अटूट रिश्ता है जिसको हम मित्रता का नाम दे सकते हैं।

यूँ तो मित्रता लेन-देन की भावना से बहुत ऊपर है पर वहीं न कहीं आपस में आदान-प्रदान ही है जो दो इकाइयों को आपस में जोड़ कर रखता है। जैसे प्रकृति मनुष्य को सबकुछ देती है वैसे ही मनुष्य का भी यह कर्तव्य है कि वह प्रकृति को संरक्षण प्रदान करे।

प्राचीन काल से ही मनुष्य ने प्रकृति के साथ अपने इस रिश्ते को निभाना प्रारंभ कर दिया था। भारतीय संस्कृति में तो प्रकृति

को विभिन्न रूपों में पूजा भी जाता है, जैसे नदियों को हमने देवी का दर्जा दिया है, सूर्य जो हमें अन्न देता है उसको हमने देवता माना है। यहां तक कि समुद्र, धरती, चंद्रमा, पहाड़, वायु, पेड़-पौधे आदि सभी को हमने देवता समान पूजा है। इसके बदले में प्रकृति ने हमें जीवन दिया है तथा जीवन जीने के लिये आवश्यक वस्तुएं प्रदान की है।

हालांकि, आज के समय में मनुष्य अपनी गलत आदतों की वजह से इस मित्रता के रिश्ते को खत्म कर रहा है। मनुष्य प्रकृति को दूषित करता जा रहा है और फिर भी प्रकृति से साथ की अपेक्षा करता है। हर तरह का प्रदूषण, विज्ञान का दुरुपयोग करके प्रकृति से छेड़छाड़ और न जाने कितना कुछ है जिससे मनुष्य ने प्रकृति को क्षति पहुंचायी है। इन सबके चलते यह मित्रता अब शत्रुता में बदलती जा रही है। प्रकृति सबकुछ सहते-सहते अंततः अपने वार भी कर रही है। यह सब प्रत्यक्ष है बेंगलूरु में भीषण गर्मी, दुबई जैसे रेगिस्तान में बाढ़, पानी की समस्या, आदि से।

मनुष्य के लिये यह बहुत जरूरी हो गया है कि वह प्रकृति के इस इशारे को समझे और फिर से वही मित्रता का पालन करे। प्रकृति को संरक्षण प्रदान करे तथा प्रकृति के साथ चले न कि इसके विपरीत। अगर मनुष्य ऐसा नहीं करता है तो जल्दी ही यह मित्रता शत्रुता में बदल जायेगी और तब इस ग्रह के साथ-साथ मनुष्य का अस्तित्व भी खत्म हो जायेगा।